नूतन संभावनाओं का नया वर्ष

डॉ. शशिकांत यादव

हम इक्कीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक के प्रारंभिक वर्षों में जीवन यापन कर रहे हैं। इस युग में समय के साथ ही हमारा समाज भी बदल रहा है। हमारे समाज का युवा वर्ग कहीं न कहीं अत्याधुनिक जटिलताओं में जकड़ रहा है। जहाँ, एक और हम अपनी परंपराओं, सामाजिक प्रथाओं और मूल्यों को भूल रहें हैं वहीं दूसरी ओर हम भौतिक संसाधनों और सोशल मीडिया की की दुनियां में उलझ रहें हैं।

इतिहास की प्रवृति है, वह अपने अतीत की गौरव गाथाओं, कहानियों और नैतिक सुविचारों को संजोकर नूतन समाज की नींव तैयार करता है। समाज के आधार मूल में उसकी परंपरा, संस्कृति और इतिहास न हो तो वह जल्द ही नष्ट हो सकता है। अपनी संस्कृति व परंपराओं को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी समाज के भावी पीढी के कंधों पर होता है। लोक संस्कृति व लोक परंपरा पर आज के युवाओं को लिखना चाहिए। हम अपनी क्षेत्रीयता और पहचान को भूल कर बहुत दूर का सफर तय नहीं कर सकते हैं। हमें अपनी अतीत की बुनियाद और अस्तित्व को अगर बचाना है तो आगामी पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक के रूप में बनाना होगा। हमारी भौतिकता कितना भी समृद्ध क्यों न हो अगर उसमें मौलिकता नहीं है तो उसका विनाश संभव है! यह सोचने का विषय है, आज दुनियां के बड़े इंटरनेट सुविधा प्राप्त और उपयोग की श्रेणी में हम अग्रसर देश हैं, फिर भी, उसका सदुपयोग कम करते हुए हम मनोरंजन के रूप में दुरुपयोग ज्यादे कर रहे हैं। भावी भविष्य को इसके दुष्परिणामों से सावधान रहना होगा। क्या जहाँ पर कॉमेडी रील बना रहें हैं वहाँ हम जल संरक्षण, प्रकृत संरक्षण और जीव हिंसा के विरुद्ध आंदोलन नहीं चला सकते? भविष्य की समस्याएं अमूर्त हैं लेकिन उतना ही गंभीर है। हमें जहाँ जल समाप्त हो रहा है वहाँ जाकर उनसे बात करके प्रसारित करना चाहिए। पर्यावरणीय जागरूकता के लिए अभियान आज की जरूरत है।

हम इस वर्ष की छोर पर खड़े हैं और ईसाई नव वर्ष का अगला साल हमारे मुहाने पर खड़ा है। इस वर्ष हमारे देश में कई अंतरराष्ट्रीय आयोजन हुए, जिसमें राजनीति के क्षेत्र में G-20 और खेल प्रतियोगिता के क्षेत्र में क्रिकेट विश्व कप का आयोजन प्रमुख है। G-20 के आयोजन के बाद विश्व मंच पर लोकतांत्रिक भारत राष्ट्र का सम्मान बढ़ा है। यह हमारे देश की एक बड़ी उपलब्धि रही है। वहीं दूसरी ओर, खेल प्रतियोगिता में नॉकआउट खेलते हुए प्रतिस्पर्धी देश आस्ट्रेलिया से मैच हार गए। हमें इन दोनों घटनाओं से यह सीखना होगा कि अपनी उपलब्धियों को और मजबूत करते हुए हमें हार को समझते हुए आगे बढ़ना होगा। इस वर्ष अंतरिक्ष के क्षेत्र में जहाँ भारत चन्द्रमा पर पहुंच कर कीर्ति स्थापित किया। वहीं, एशियन गेम में पहली बार हम सौ के पार मेडल लाने में सफल हुए। इन उदाहरणों का तनिक भी मतलब यह नहीं कि हमारे देश की असफलताएं नहीं रही हैं। हमें उन असफलताओं से सीखने की जरूरत है और संभावनाओं के नूतन वर्ष में हमें अपनी सांस्कृतिक मूल्यों पर आगे चलते हुए राष्ट्र, समाज और परिवार को आगे बढ़ाना है।

हमें उत्तरोत्तर समुचित वृद्धि की संकल्पनाओं और संभावनाओं के साथ नये वर्ष में प्रवेश करना चाहिए। विचारों का बदलाव जरूरी है, लेकिन मूल्यों में बदलाव हित में नहीं है। आईये नये वर्ष में हम यह संकल्प लें कि हमें अपने स्वाध्याय, स्वबोध, स्वराज्य और स्वराष्ट्र को उन्नत दिशा में आगे बढ़ाना है। बुरे आचरण और आदतों को छोड़ कर अपने समाज की बुराइयों को उजागर करते हुए उसमें सुधार का प्रयास करना है। भौतिक साधनों एवं संसाधनों का उपयोग उचित दिशा में करना है। भविष्य की मानवीय चिंताओं जैसे समाजिक असमानता व आर्थिक विषमता में सुधार हेतु प्रयासरत रहना है। अंत में, हमें जल और प्रकृत के दोहन को कम करने हेतु इन्हीं सोशल प्लेटफार्म का उपयोग करना है और जन जागरूकता बढ़ाते हुए अपने नैतिक कर्तव्यों का निर्वहन करना है। यह नूतन संभावनाओं का आगामी वर्ष साहित्य-रत्न परिवार के साथ ही सर्वकल्याण व हित में हो ऐसी ही कामना व ईश्वर से प्रार्थना है।

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, समाजिक विज्ञान संकाय, डी.ए.वी, पी.जी कालेज, वाराणसी (सम्बंध काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)